<u>,</u> 76 P K

अतर सिंह,

34 सम्बद

म्ह्राग्रेडे, लिम्गिराह्न

सेवा में,

, फ़ निहम

,काष्ट्रभिात्रम

निकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण,

उत्तराचल,दहरादून ।

देहरादून: दिनांक 🏖 मार्च, 2006 4-गिनिक्सा अनुभाग-4

। 1575-7मी हुई ८००-०००८ विक विष त्रि मि

। ई क्रिक FIPK त्रीकृष्टि विद्वार पिट्ट कि म्डिंग कि मार्ग कि पिट क कांन्त्री एप्राप्ताप्त किन्छन सण्यु क्सड़ एक प्रत (कप्र) १० हिलाई हो (एप्राप्ताप्त प्राप्ताप्त विशेष क्षित्र विशेष क्षित्र विष्या है । निवित हो कि १३०८.०१.६० को किकि स्थास्थ एवं प्राप्ति के अन्तर्भ । १५०८/२८१-2002-2-iiivxx\872-0म एर्झानमाए एत्रिम लागम्ला हि की ई एड्ड एर्झन कि नेक के हिंस में मक क 2005.01.60 कांन्डी 4002\221-2002-2-iiivxx\872-क्षिक क्षेत्र क निमाष्ट कथ्यिन किन्छित

2210-चिकित्सा तथा लोक स्वास्थ्य-आयोजनागत, 01-शहरी स्वास्थ्य सेवाये-पाश्चात्य चिकित्सा पद्भति, - इस सम्बन्ध में होने वाला रुख शिक्का वर्ष 2006-07 के अनुदान में हाला-12, लेखाशीर्वक

मं $\frac{1}{2}$ $\frac{1}{2}$ । गिर्मा प्रशासन, ०३-मुख्यालय अधिष्ठान के अन्तर्गत सुसंगत इकाईयों के ममें डाला जायेगा

। ई ईर ए रुकी ग्रिए प्रे तीम इस रुपार

क्रिमि प्र (अतर सिंह) भीवदीय

4 Edl-118(1)/XXVIII -4-2006-122/2004

नः निर्माप कुई जिल्लाक कार्यक्रम कं अनिर्माध के भिल्ला के मिलितिए

- । महाप्रवृष्ट्र, । महास्राक्ष्यक्ष्यां मान्यरा, देहरादुन
- १ म्ट्राएडर्ट ग्रागमिक ,काष्ट्रमी -८
- म्ह्राग्रहर्म,शिक्षशीर्थाक ठगीन है
- । ०िम्५०६म \ गायि मर्थान । १६-गायिम (प्राप्त प्राप्त । १५० मायि ।
- । छड़ात डाए -4